

॥ श्री हरीः ॥

गीता जी की महिमा

प्रत्येक मनुष्य को अपने कल्याण का जन्मसिद्ध अधिकार है। गीता में परमार्थ का सरल रास्ता दिखलाया गया है। गीता भगवान् कृष्ण के मुख की वाणी तथा वेदव्यासजी द्वारा लिखित सर्वोपरि भारतीय ग्रंथ है। गीता को कंठस्थ व हृदयस्थ करने से मन को अथाह शांति तथा जीवन के समुचित प्रबंधन की सीख मिलती है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को गीता का अवश्य नित्य अध्यास करना चाहिए।

गीता ग्रंथ की रचना विक्रम संवत से पहले लगभग 3000 वर्ष पूर्व की मानी जाती है। यह मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन रविवार को भगवान् श्री कृष्ण के मुखारबिन्द से निकली हुई दिव्य वाणी है। इसी दिन गीता जयंती के रूप में मनाया जाता है इसके श्रोता अर्जुन तथा संकलनकर्ता महर्षि वेदव्यास जी मुनि तथा लेखक भगवान् गणेश जी हैं।

महाभारत के भीष्म पर्व के 25 से 42 अध्याय तक गीता का वर्णन हुआ है। संपूर्ण वेदों का सार उपनिषद है और और उपनिषदों का सार गीता है। गीता एक बहुत ही अलौकिक विचित्र सार्वभौमिक ग्रंथ है। यह १६०कों के रूप में है, और भगवान की वाणी होने के कारण वेद ऋचाओं के समान मंत्र रूप है। इसकी भाषा सरल होने पर भी आशय गंभीर होने से यह सूत्र रूप से है इसकी महिमा अगाध और असीम है। इसमें पारमार्थिक व जीवन उपयोगी पूरी सामग्री मिलती है, चाहे वह किसी भी वर्णाश्रम का व्यक्ति क्यों ना हो।

गीता में वास्तविक तत्व परमात्मा का ही वर्णन हुआ है। गीता साक्षात् भगवान का हृदय है। सभी धर्म संप्रदाय के लोग इस का आदर करते हैं। यह संपूर्ण शास्त्रों का सार है, जो अपने वर्णाश्रम तथा धर्म को कर्तव्य समझकर निष्काम भाव से अनुष्ठान करता है, वह भगवत् प्राप्ति का अधिकारी हो जाता है। गीता का आश्रय लेकर पाठ करने मात्र से बड़े विचित्र अलौकिक और शांति दायक भाव स्फुरित होते हैं। गीता का तात्पर्य मनुष्य मात्र का कल्याण करना है, गीता का